भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र समूह

दैनिक भास्कर

SUNDAY

14 राज्य • 67 संस्करण | वर्ष 7 • अंक 346 • कुल पृष्ठ 14+4 • मूल्य ₹ 5.00 • रजरंग अंक | राष्ट्रीय संस्करण नई दिल्ली | 15 जून 2014 | dainikbhaskar.com

एडमिशन . बेहतरीन कैंपस और प्लेसमेंट सबसे बड़ा आकर्षण

दो बड़े विश्वविद्यालयों में दाखिला लाखों विद्यार्थियों का सपना

देश के दो बड़े विश्वविद्यालयों में दाखिले का दौर शुरू हो चुका है। यहां प्रवेश पाना विद्यार्थियों के लिए बड़ा सपना है। दिल्ली और वाराणसी के इन परिसरों में आखिर ऐसा क्या है कि लाखों की तादाद में विद्यार्थी दाखिले के लिए कतार लगाए हैं।

बीएचयू : शानदार इन्फ्रास्ट्रक्चर, फीस नाममात्र की, प्लेसमेंट बढ़िया

बीएचयू की प्रवेश परीक्षा से लौट रहे विद्यार्थियों की भीड़।

▪ भास्कर न्यूज़ नेटवर्क . वाराणसी

देहरादून की शिवानी शर्मा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में दाखिले के लिए दो प्रवेश परीक्षाओं में बैठीं। पहले बी.एस-सी. और फिर बीए के लिए। उनका एकमात्र लक्ष्य सिर्फ बीएचयू में दाखिले का है। साइंस न सही, आर्ट्स चलेगा। वे देश के उन तीन लाख विद्यार्थियों में से एक हैं, जो 180 कोर्सेस की 10 हजार सीटों पर अपनी जगह बनाने के लिए प्रवेश परीक्षाओं में शामिल हुई।

नाममात्र की फीस पर शानदार इन्फ्रास्ट्रक्चर वाले इस कैम्पस में प्लेसमेंट गजब का है। प्लेसमेंट सेल के कोऑर्डिनेटर डॉ. एच.पी. माथुर ने बताया कि फरवरी में कुछ कंपनियों को लेंग्वेज के विद्यार्थी चाहिए थे। हमने विभाग में बात की। पता चला कि सारे बच्चों को पहले ही नौकरियां मिल चुकी हैं। डॉ. माथुर कहते हैं, 'पांच सौ कंपनियां हर साल आती हैं। कुछ पीजी कोर्स में 10-12 लाख रुपए सालाना के पैकेज सामान्य हैं। मैनेजमेंट में औसत पैकेज सात लाख रुपए। सामान्य ग्रेजुएट भी चार-पांच लाख रुपए। आईआईटी में 150 फीसदी प्लेसमेंट। विद्यार्थियों को कंपनियों से रूबरू कराने की तैयारी के लिए टीसीएस के साथ मिलकर ग्रोइंग नेक्स्ट लीडर नाम से एक ट्रेनिंग शुरू की है।' विद्यार्थियों की कोशिश 13 सौ एकड़ में फैले एशिया के इस सबसे बड़े आवासीय विश्वविद्यालय में आने की है, जहां 16 हजार विद्यार्थी शानदार होस्टलों में रहते हैं।

शेष पेज 6 पर

डीयू : फीस 15 हजार रुपए तक, 19 लाख तक के प्लेसमेंट

▪ भास्कर न्यूज़ नेटवर्क. नई दिल्ली

दिल्ली विश्वविद्यालय की पहचान खुद से ज्यादा अपने सेंट स्टीफन, हिंदू, किरोड़ीमल, हंसराज, रामजस, मिरांडा हाउस जैसे 79 कॉलेजों के नाम से है। यहां कट ऑफ 97 से 100 फीसदी के बीच रहता है। अच्छे प्लेसमेंट दाखिले में प्रतिस्पर्धा का बड़ा कारण हैं। कॉलेजों के अपने प्लेसमेंट सेल और यूनिवर्सिटी का अपना सेंट्रल कैंपस प्लेसमेंट सेल है, जहां पत्राचार के छात्रों को भी जॉब ऑफर मिलते हैं। सेंट स्टीफन कॉलेज में इस बार 19 लाख रुपए सालाना का अधिकतम पैकेज मिला।

औसत पैकेज 6.7 लाख रुपए रहा। एसआरसीसी में नौ छात्रों को 14 से 15 लाख का पैकेज मिला। अन्य कॉलेजों का औसत पैकेज भी छह लाख रुपए सालाना रहा। सेंट्रलाइज्ड प्रक्रिया होने से 54 हजार सीटों के लिए करीब ढाई से तीन लाख आवेदन होते हैं। एक ही फार्म सभी कॉलेजों के लिए पर्याप्त है। सेंट स्टीफन कॉलेज अल्पसंख्यक दर्जा प्राप्त है, इसलिए यहां प्रक्रिया अलग है। यहां 400 सीटों के लिए 50-60 हजार आवेदन आते हैं। फीस सात हजार से 15 हजार रुपए सालाना। होस्टलों के कारण बाहर के छात्रों की पहली पसंद यही कॉलेज हैं। विवि के 21 होस्टलों में करीब सात हजार छात्रों को जगह मिलती है। विदेशी छात्रों के लिए खास सुविधाएं हैं।

बीएचयूः शानदार...

ज्यादातर विद्यार्थी यहां के माहौल और साधनों का अधिकतम इस्तेमाल सिविल सर्विसेस की तैयारियों में करना चाहते हैं। जैसे 15 लाख किताबों और 50 हजार ई-बुक्स से लैस साइबर लाइब्रेरी, मुफ्त इलाज और आवागमन, लाइंग क्लब, स्वीमिंग पूल सहित डेढ़ लाख हरे-भरे पेड़ों का सुरक्षित परिसर, जहां दुनिया के 65 देशों के विद्यार्थी एक साथ रहते हैं। पर प्रो. एम.आर. पाठक का कहना है कि बीएचयू बेहतर करिअर चुनने का एक बड़ा प्लेटफॉर्म है, जहां आठ साल में प्रवेश परीक्षाओं में बैठने वालों की तादाद तीन गुना बढ़ी है।

सालाना खर्च पांच हजार से कम! : यहां दो-ढाई हजार रुपए सालाना फीस है। डेढ़ हजार रुपए होस्टल के। इससे दस गुना ज्यादा पैसा तो सिर्फ दाखिले की तैयारी के लिए कोचिंग में खर्च हो जाता है। शहर में करीब 50 हजार विद्यार्थी बीएचयू में आने के लिए कोचिंग लेते हैं। 50 से ज्यादा कोचिंग क्लासेस इनकी दम पर फलफूल रही हैं, जिनकी फीस दस हजार रुपए महीने तक है।

प्रवेश मात्र से रिश्तों में 'मूल्यांकन' बेहतरः दाखिला पाने वालों में उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड और बंगाल के आधे से ज्यादा विद्यार्थी होते हैं। बिहार के विद्यार्थियों को लेकर यह प्रसिद्ध है कि किसी भी कोर्स में सिर्फ प्रवेश भर से लड़के का 'मूल्यांकन' बहुत बेहतर हो जाता है। बिहार मूल के एक प्रोफेसर ने कहा कि सामाजिक दायरे में पता चलते ही कि लड़का बीएचयू में पढ़ रहा है, लड़की वाले अचानक सक्रिय हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि बीएचयू में आने भर से उसका करिअर बन गया।